ISSN: 2321-8819 (Online) 2348-7186 (Print) Impact Factor: 1.498 Vol. 8, Issue 5, May, 2020

शेख़ शरफ़ुद्दीन याह्या मनेरी : आध्यात्मिक यात्रा का एक अध्ययन

मोहम्मद रिज़बान अंसारी
शोधार्थी, विभाग इस्लामिक स्टडीस
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
उत्तर-प्रदेश 202002
mrizwanamu@gmail.com
+918445359124

सार

शेख़ शरफ़ुद्दीन अहमद याह्या मनेरी जिन्हें मखदूम-अल-मुल्क या मखदूम-ए-जहान के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय सूफ़ी संतों में से एक प्रमुख सूफ़ी व्यक्तित्व थे। शेख़ शरफ़ुद्दीन मनेरी का जन्म 1263 ई। में मनेर में हुआ था, जो पटना के पश्चिम में 15 मील की दूरी पर है। शेख़ मनेरी, फ़िरदौसी सूफ़ी सिलसिले के एक महान सूफ़ी संत थे, जो सुहरावर्दी सूफ़ी सिलसिले की शाखा है। यह सिलसिला बिहार में बहुत लोकप्रिय है। यह इस विशेष क्षेत्र में शेख़ शरफ़ुद्दीन याह्या मनेरी द्वारा लोकप्रिय हुआ। शेख़ याह्या मनेरी ने अपना पूरा जीवन शिक्षण और लेखन के लिए समर्पित कर दिया क्योंकि वह न केवल एक सूफ़ी व्यक्तित्व थे, बल्कि फारसी साहित्य के बीच भी एक महान व्यक्तित्व थे। उनके पत्रों के संग्रह (मकतुबात) और उपदेश (मलफूज़ात) को व्यापक प्रशंसा मिली। इस शोध पत्र के माध्यम से हम शेख़ शरफ़ुद्दीन अहमद याह्या मनेरी की आध्यात्मिक यात्रा को दिखाने की कोशिश कर रहे हैं एवं उनके शिक्षण और निर्देशों के प्रभाव को जो जनता पर हुये उनको देखने का प्रयास कर रहे हैं।

कीवर्ड : शरफ़ुद्दीन, सूफ़ी-संत, अध्यात्म, यात्रा, व्यवहार, प्रभाव।

परिचय

13 वीं शताब्दी में भारत के मुसलमानों के इतिहास में, बिहार भारत के ऐसे राज्यों में से एक है, जिसमें कई सूफ़ी संतों का उदय हुआ। उनमें से एक शेख शरफ़ुद्दीन याह्या मनेरी थे, जिनका नाम उस विशेष क्षेत्र में आज भी प्रसिद्ध है। इस प्रकार स्पष्ट रूप से वह सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्वों में से एक थे, जिनके प्रभाव से अनगिनत लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया। शरफ़ुद्दीन याह्या मनेरी 1263 ई./661 हिजरी में इस दुनिया में आए थे। वह मनेर के निवासी थे, जिसके कारण उन्हें मनेरी के नाम से भी जाना जाता था। उनके पिता मख़दूम याह्या मनेरी भी मनेर में अपने युग के प्रसिद्ध सूफ़ी संत थे।[i] शरफ़ुद्दीन की बौद्धिक स्मृति अत्यंत तीव्र थी जिस कारण उन्होंने धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अरबी, फारसी, तर्क और दर्शन जैसे अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त करने में अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया।

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

उनके समय की शिक्षा-प्रणाली कुछ ऐसी थी, जिसे वह नापसंद करते थे दूसरे शब्दों में कहें तो वह इससे संतुष्ट नहीं थे | क्योंकि उनके अनुसार यह एक ऐसी प्रणाली थी, जो छात्रों को उनकी बौद्धिक क्षमता विकसित करने में मदद नहीं करती, बल्कि उन्हें नीचा दिखाती थी। यह बोध की तुलना में स्मरण की प्रक्रिया अधिक थी। वह ऐसी शैक्षिक प्रणाली का हिस्सा बनने के लिए तैयार नहीं थे, जिसने विधार्थियों को पुस्तकें कंठस्थ करना सिखाया हो। उन्होंने अध्ययन की ऐसी प्रक्रिया पर बल दिया जिससे छात्रों की नैतिकता और व्यक्तित्व दोनों निखर कर सामने आ सकें।[ii]

अपने अध्ययन के दौरान, वह अपने समय के सबसे प्रसिद्ध विद्वानों और शिक्षाशास्त्रियों में से एक, मौलाना शरफ़ुद्दीन अबू तुआमा के संपर्क में आए। वे काफ़ी हद तक उनके स्वभाव और ज्ञान से प्रभावित थे। *ख़वान-ए-पुर नि'मत* में उनके बारे में चर्चा करते हुए, शेख अहमद शरफ़ुद्दीन कहते हैं कि उनकी बौद्धिक क्षमता उच्च स्तर की थी, जिसकी प्रसिद्धि पूरे भारत में हुई।

शाह शुएब फिरदौसी ने अपने *मनाकिब-उल-असफ़िया* में उल्लेख किया है कि शेख अहमद शरफ़ुद्दीन अपने अध्ययन के मामले में इतने श्रमसाध्य थे, कि उन्हें उससे दूर रहना पसंद नहीं था। यह भी कहा जाता है कि वह ज्ञान प्राप्त करने में इतना मशगूल थे कि शायद ही उन्हें अपने परिवार द्वारा भेजे गए पत्रों को पढ़ने का मौका मिला हो। सभी प्रकार का धार्मिक और व्यापक विज्ञानों को जानने के बाद, मौलाना शरफ़ुद्दीन ने उन्हें कीमियागरी सीखने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि धार्मिक शिक्षा उनके लिए पर्याप्त है। उनके प्रति उनका इतना सम्मान था कि बाद

में मौलाना शरफुद्दीन ने अपनी बेटी के साथ उनकी शादी कर दी।[iii]

आध्यात्मिक उद्देश्य

690 हिजरी में, याह्या मनेरी के पिता का निधन हो गया। उस समय शरफुद्दीन मनेरी सोनारगाँव में थे। जैसे ही यह खबर उनके पास पहुंची, वह उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए रवाना हो गए।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि वह शैक्षिक प्रणाली से संतुष्ट नहीं थे, इसलिए उन्होंने अपनी मां से अनुरोध किया की वह उस स्थान (सोनारगाँव) को हमेशा के लिए छोड़ कर और दिल्ली में जाकर, दिल्ली के किसी महान शेख़ के मार्गदर्शन में आधात्मिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं। माँ से आज्ञा मिलने के उन्होंने दिल्ली के लिए 690 हिजरी में अपनी यात्रा आरंभ की, जहां सूफ़ी शेख़ ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया को छोड़कर कोई उन्हें प्रभावित नहीं कर सका। उन्होंने शरफुद्दीन मानेरी को विनम्रता दिखाई। वे साहित्यिक विषयों पर चर्चा करने लगे तथा निज़ामुद्दीन औलिया उन प्रतिक्रियाओं से बहुत प्रभावित थे, जिन प्रश्नों का उत्तर शरफुद्दीन दे सकते थे। बाद में वे आगे के अध्ययन के लिए पानीपत चले गए।

दोनों जगहों पर रहने के बाद, वह उस संतुष्टि को नहीं पा सके, जिसकी उन्हें तलाश थी। उनके बड़े भाई शेख़ जलालुद्दीन ने उन्हें ख़्वाजा नजीब-उद-दीन फिरदौसी से मिलने की सलाह दी। वह जाने के लिए तैयार नहीं थे लेकिन उनके भाई ने ज़ोर दिया और आखिरकार उन्होंने फिर से दिल्ली की ओर अपना रुख किया। शेख़ शरफुद्दीन ने बाद में बताया कि ख़्वाजा नजीब-उद-दीन के साथ उनका अनुभव अलग था क्योंकि उन्होंने अन्य सूफ़ी संतों से मिलने से पहले इस तरह का दृश्य कभी नहीं देखा था। बहुत जल्द शेख़ शरफुद्दीन, ख़्वाजा नजीब-उद-दीन के शिष्य बन गए और उनकी देख-रेख में आध्यात्मिक अध्ययन पूरा किया।[iv] उसके बाद वह मनेर वापस लौटने के लिए निकल पड़े, लेकिन उनकी यात्रा के बीच में कुछ दिलचस्प हुआ। उन्होंने अल्लाह की याद में खुद को व्यस्त रखने के उद्देश्य से कई सालों तक आगरा के जंगलों में रहने का फैसला किया।

चरित्र और व्यवहार

मखदूम शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी के प्रेरणादायक चरित्र की एक उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि उनके गंभीर भक्तिपूर्ण कृत्यों और धार्मिक अनुरागों का प्रतिफल प्रेम में उनके स्वपन को मिटा देता था, जो प्रेमी के अस्तित्व को प्रभावित करता है। उनके पत्रों और प्रवचनों का प्रत्येक शब्द अल्लाह की ईमानदारी से कामना और भावुक प्रेम को दर्शाता है जो इस प्रकार हज़रत ख़्वाजा नक्शबंदी द्वारा वर्णित है –

What I desire most is to have no desire at all

अर्थात- जो मैं सबसे ज्यादा चाहता हूं, उसकी कोई इच्छा नहीं है।

यह ख्वाजा नजमुद्दीन कुबरा द्वारा स्थापित सूफी सिलसिले के संरक्षक थे, जिसके सबसे योग्य उत्तराधिकारी शेख़ शरफुद्दीन याह्या मनेरी थे।

शुएब फिरदौसी ने लिखा है कि एक प्रसिद्ध सूफी संतों की बैठक में, सभी ने उनके द्वारा पोषित इच्छा व्यक्त की। जब मखदूम याह्या मनेरी की बारी आई, तो उन्होंने कहा-

What I desire is that I should remain unknown in this world as well as in the world beyond

अर्थात- मेरी इच्छा है कि मैं इस दुनिया के साथ-साथ उस दुनिया से भी अनजान रहूं।

शेख याह्या मनेरी ने एक बार इन शब्दों में अपने आत्म-परित्याग की अभिव्यक्ति दी थी –

Wholly overtaken by the illusions of Satan, I know neither anything about my own self nor find any trace of Islam in me

अर्थात- शैतान के भ्रम से आगे निकलकर, मैं न तो अपने स्वयं के बारे में कुछ जानता हूं और न ही मै अपने अंदर इस्लाम का कोई निशान ढूंढता हूं।

एक पत्र में, जो शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी ने अपने एक मित्र को लिखा था, उन्होंने अपने आत्म पर आँसू बहाने के महत्व पर ज़ोर दिया। यहाँ उदधृत इस पत्र से संभवता उनके दिल में पड़ने वाले विस्फोट पर प्रकाश पड़ता है | ज्ञानियों ने अल्लाह की कसम खाकर कहा है कि किसी भी इंसान का अपने आत्म पर नियंत्रण करने से अधिक अल्लाह को और कुछ भी प्रिय नहीं है। इसलिए हमें यह चाहिए कि सच्ची श्रृद्धा के अग्रदूत ख़्वाजा ओवैस क़रनी से विलाप और व्यवहार करने का तरीका सीखें और देखें कि वह यह कैसे करते थे। वह जो हमेशा अपनी आत्मा पर दुःख प्रकट नहीं करता, यह अपेक्षित दिन के दावेदार है; वह सिर्फ एक मृत

ISSN: 2321-8819 (Online) 2348-7186 (Print) Impact Factor: 1.498 Vol. 8, Issue 5, May, 2020

मांस है जिसका दिल उसकी लालसाओं द्वारा कुचल दिया जाता है।

नेक दिली

उनके हृदय की दयालुता थी जो सभी पुरुषों के लिए विस्तारित थी, चाहे वे दोस्त हों या दुश्मन, समृद्धि में हों या संकट में। उनके द्वारा लिखे गए एक पत्र में वह इसे एक जन्मजात सद्गुण तथा अल्लाह के लोगों की प्रेरणा शक्ति कहते हैं, क्योंकि उन्होंने खुद को अपनी आत्मा की यात्रा में इस गुण को आत्मसात किया था। एक सच्चे रहस्यवादी की विशेषताओं को दर्शाते हुए वे कहते हैं –

Like the glorious lamp of the heaven his benevolence goes out to all, young and old; he remains hungry and unclad but feeds and clothes others. He cares neither for the injustice done to him nor for the malevolence of those who are hard upon him. Instead, he intercedes for them, repays goodness for evil and gives thanks for abuses. Do you know why he does so? Being he saved and secured, his heart is filled with a desire to do good to all. Like the sun which shines over mountains and vales, his benevolence encompasses friends and foes alike; in humility he is like the earth trodden by all; in generosity he is like the river whose lofty surge benefits the friends as well as enemies. Independent of every attachment, the downpour of his benignity showers over the east as much as over the west. He finds everything indwelling in god as manifestations of the same creator and endued with qualities assigned by him. Whoever lacks these qualities of spirit cannot lay a claim on the path of mysticism. (24th letter)

अर्थात- *स्वर्ग के शानदार दीपकों की तरह उसका परोपकार युवा और बूढ़े सभी के लिए होता है; वह भूखा और निर्वस्त्र रहता है, लेकिन दूसरों को भोजन और कपड़े देता है। वह न तो अपने साथ हुए अन्याय की परवाह करता है और न ही उन लोगों के पुरुषत्व के लिए जो उस पर कठोर हैं। इसके बजाय, वह उनके लिए हस्तक्षेप करता है, बुराई के लिए अच्छाई को याद करता है और गालियों के लिए धन्यवाद देता है।*

क्या आप जानते हैं कि वह ऐसा क्यों करता है ? साफ और सुरक्षित होने के कारण, उसका दिल सभी के लिए अच्छा करने की इच्छा से भरा है। जैसे सूरज जो पहाड़ों और घाटियों पर चमकता है, उसका परोपकार दोस्तों और दुश्मनों को समान रूप से शामिल करता है, विनम्रता में वह सभी के द्वारा पृथ्वी के समान है, उदारता में वह उस नदी की तरह है जिसके बुलंद हौसले से दोस्तों के साथ-साथ दुश्मनों को भी फायदा होता है। प्रत्येक लगाव से स्वतंत्र, अपने सौम्यता की गिरावट पूर्व की तुलना में अधिक पश्चिम में दिखती है। वह अल्लाह को उसी निर्माता की अभिव्यक्तियों के रूप में देखता है और उसके द्वारा सौंपे गए गुणों से संपन्न होता है। जिस किसी के पास आत्मा के इन गुणों का अभाव है, वह रहस्यवाद के मार्ग पर दावा नहीं कर सकता है। (24 वां पत्र)

शेख़ शराफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी अन्य सूफी उपदेशकों की तरह, दान और परोपकार की भावना वाले व्यक्ति थे। वे मानवतावादी व्यक्ति थे, दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुचाना उनके नज़दीक गंभीर पाप था। एक बार जब वह स्वैच्छिक उपवास रखे हुए थे, एक व्यक्ति उनके पास उपहार लेकर आया और उसने प्रार्थना की इसमें हिस्सा लें। मखदूम याह्या मनेरी ने उसे लिया और कहा –

one can make up for the broken fast but not for the broken heart

अर्थात- कोई टूटे हुए उपवास को बना सकता है लेकिन टूटे हुए दिल के लिए नहीं।

उन्होंने हमेशा दूसरों के दोष को छुपाया और अगर उन्हें कभी किसी के दुर्व्यवहार के बारे में बताया गया, तो उन्होंने तुरंत उस व्यक्ति की ओर से स्पष्टीकरण दिया, जिसकी शिकायत की गई थी।

मनाकिब-ए-असफिया में यह कहा गया है कि एक बार उन्हें एक शराबी व्यक्ति के नेतृत्व में एक सामूहिक प्रार्थना में शामिल होना पड़ा। किसी ने इसके बारे में शिकायत की तो मखदूम शरफुद्दीन याह्या मनेरी ने जवाब दिया –

He should not be drunk all the time

अर्थात- *उन्हें हर समय नशे में नहीं रहना चाहिए।*

शिकायतकर्ता ने कहा –

Yes, he ever remains drunk. But not during Ramadan

अर्थात- हाँ, वह कभी भी नशे में रहता है लेकिन रमजान के दौरान नहीं।

शेख शराफुद्दीन याह्या मनेरी द्वारा दिया गया जवाब नहीं था।

एक अन्य पत्र में वे लिखते हैं-

The friend is nigh even if he is away and the stranger is away even if he is present with you. But this would happen when you would abandon the world and attain the reality of your own self, and cast off your heart as did the companions of the cave

अर्थात- दोस्त दूर हो या आपके साथ मौजूद हो, भले ही अजनबी दूर हो। लेकिन यह तब होगा जब आप दुनिया को त्याग देंगे और अपने स्वयं की वास्तविकता को प्राप्त करेंगे, और अपने दिल को बंद कर देंगे जैसा कि गुफा के साथी करते हैं।

संघर्ष

शेख़ नसीरुद्दीन (नसीरुद्दीन महमूद चिराग-देहलवी 14वीं शताब्दी में चिश्ती सिलसिले के प्रमुख सूफ़ी संत थे। वे प्रसिद्ध सूफी संत, निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य थे और बाद में उनके उत्तराधिकारी बने। वे चिश्ती सिलसिले के अंतिम महत्वपूर्ण सूफ़ी थे)[v]। शेख़ शरफुद्दीन याह्या मनेरी ने भी कई कठिनाइयों का सामना किया और उन नवाचारों और गलत धारणाओं के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया, जो उस समय इस्लाम में पेश किए जा रहे थे | विभिन्न संप्रदाय इस्लाम के शिविर में दिखाई दे रहे थे और वे वर्तमान नवाचारों के पक्ष में निराधार तर्क और सोच विचार करने को बोल रहे थे। शेख़ शरफुद्दीन याह्या मनेरी ने अपने लेखन की मदद से उनके तर्कों का खंडन करने और इस्लाम को अशिष्टता और भ्रष्टाचार से मुक्त करने की पूरी कोशिश की।

शेख़ शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी कहते हैं कि कुछ ऐसे लोग हैं जो नमाज़ (प्रार्थना) पढ़ने के लिए स्पष्टीकरण और कारण की मांग करते हैं। इन लोगों के लिए सीधा सा जवाब है कि सूफियों में से प्रत्येक सूफ़ी ने नमाज़ के माध्यम से उच्च स्थान प्राप्त किया है। इसलिए यह केवल शरीयत का मार्ग है जिसके माध्यम से एक आदमी दुनिया के परे अल्लाह के वरदानों और इनामों को प्राप्त कर सकता है।

उन्होंने यह भी कहा कि कुछ ऐसे भी लोग हैं जो बहुत गलत धारणाओं के तहत काम कर रहे हैं। इन संप्रदायों में से एक का मानना है कि अल्लाह स्वतंत्र और निरपेक्ष है, इसलिए वह उनकी प्रार्थनाओं से अलग है। उनका तर्क है कि चूंकि अल्लाह अपने प्राणियों से स्वतंत्र है, इसलिए उसे वैराग्य, सतर्कता और तपस्या की कोई आवश्यकता नहीं है।

शेख़ शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी चौदहवीं शताब्दी के प्रख्यात विद्वान थे। उन्होंने आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस संदर्भ में उनकी मकतूबात बहुत प्रसिद्ध है। शेख अब्दुल-हक़्क़ मोहद्दिस देहलवी या अल-मुहद्दिस शेख़ अब्दुल-हक़ देहलवी एक इस्लामिक विद्वान थे[vi], जो शरफुद्दीन मनेरी की मकतूबात पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं –

O he of the disciples of Sheikh Sharafuddin Maneri has collected the sayings (Malfuzat) of the Sheikh. But the Maktubat of the contain more elusiveness and literary enthusiasm as compared with his Malfuzat[vii]

शेख़ शरफुद्दीन मनेरी के शिष्यों ने शेख़ के कथनों को (मलफ़ुज़ात) को एकत्र किया है। लेकिन उनके मलफ़ुज़ात के साथ तुलना में मकतूबात में अधिक साहित्यिक उत्साह है।

शेख़ शरफुद्दीन याह्या मनेरी की मकतूबात एक बार फिर से हमें अल-ग़ज़ाली के समय में ले जाती है और 13 वीं शताब्दी के भारतीय मुस्लिम सूफ़ी संतों और इमाम ग़ज़ाली के बीच के रिश्तों की याद दिलाती है। ज्ञान, प्रेरणा, अल्लाह के प्रति प्रेम, अल्लाह की दृष्टि, अल्लाह की अवधारणा, आत्मा की प्रकृति, इच्छा की स्वतंत्रता के संबंध में उनके बीच विचारों का घनिष्ठ संबंध है।

इसके अलावा हम पाते हैं कि शेख़ शरफुद्दीन ने अपनी मकतूबात में आध्यात्मिकता से सम्बंधित सभी विषयों पर विचार किया है। जिनका उल्लेख *कश्फ़ुल-महजूब* (अली अल-हुजवेरी का मशहूर कार्य) में किया गया है। शेख़ मानेरी के विचार की मुख्य अवधारणाएँ इस प्रकार हैं -

- शरीयत, तरीक़त और हकीकत।
- अल्लाह की धारणा।
- अल्लाह का ज्ञान।
- अल्लाह का प्यार।
- अल्लाह की दृष्टि।
- आत्मा का स्वरूप।
- स्वतंत्रता की इच्छा।
- दुनिया।

आत्म-अनुशासन और प्रेम का जीवन

मनाकिबुल-असफिया के लेखक ख़्वाजा नजीबुद्दीन फिरदौसी ने घोषणा की कि शेख़ शरफुद्दीन को फरदौसिया सिलसिले के धार्मिक अनुशासन को फैलाने की अनुमति दे

दी गई। ख़्वाजा नजीबुद्दीन ने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें दिव्य प्रेरणा के माध्यम से सही रास्ता दिखाया जाएगा। उन्होंने उनसे विदा ली और शेख़ शरफुद्दीन मनेरी ने फिर मनेर की तरफ यात्रा जारी की।

शेख़ शरफुद्दीन ने ख़्वाजा नजीबुद्दीन से विदा ली तो वह आध्यात्मिक पीड़ा की स्थिति में आ गए। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि जैसे कोई अत्याचारी बेचैनी उनके दिल में बस गई है और वह समय के साथ बढ़ती चली जा रही है। शेख़ शरफुद्दीन तब बेहिया (जंगल) के पास चले गए। वहाँ एक बहुत ही रोचक घटना घटी। ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने मोर के बारे में सुना था, जिसके कारण दिव्य प्रेम की ऐसी प्रबल भावना उनमें उभरी कि उन्होंने एक जंगल में शरण ली। उनके करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों ने उनकी तलाश की लेकिन उनके ठिकाने का पता लगाने में असमर्थ रहे। उसके बाद वह राजगीर के जंगल में चले गए। अपने जीवनकाल के बारह वर्ष जंगल में व्यतीत करने के कारण गहन तपस्या और कठिन धार्मिक निष्ठा के साथ रहने लगे।[viii]

उनके जीवन के इस पड़ाव ने उन्हें दिव्य प्रेम की खोज में निवास करके अपने स्वयं के बारे में भूल जाने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि वह आध्यात्मिक सुख की खोज की अवस्था से गुज़र चुके थे, फिर भी वह इन कठिन विषयों द्वारा अर्जित की गई वस्तुओं से असंतुष्ट प्रतीत होते थे।

बिहार में

जंगलों में निवास करते हुए ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के एक शिष्य जिन्होंने अपने गुरु का नाम रखा लेकिन उन्हें मौलाना निज़ाम मौला के नाम से जाना जाता था।[ix] शेख़ शरफुद्दीन के बारे में कुछ लोगों से पता लगाया जो जंगल में थे। बिना किसी देरी के मौलाना निज़ाम मौला और उनके कुछ शिष्य शेख़ शरफुद्दीन से मिलने के लिए दौड़े पड़े। शेख़ शरफुद्दीन द्वारा अत्यधिक प्रभावित होने के बाद मौलाना निजज़ाम मौला अक्सर शेख़ से मिलने आते थे।

शेख़ शरफुद्दीन इन नियमित बैठकों से सहज नहीं थे और इसलिए उन्होंने एक बार उन्हें बताया कि वह खुद आएंगे और शुक्रवार को उनसे मिलेंगे और उनके साथ इबादत करेंगे। यह प्रस्ताव निज़ाम मौला ने स्वीकार कर गया। शेख़ मनेरी को एक बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए, उनके प्रशंसकों ने उनके लिए एक झोपड़ी बनाने का फैसला किया जहां उन्होने शुक्रवार की इबादत के बाद आराम किया।

समाज पर आध्यात्मिक प्रभाव

आधी सदी से अधिक (724 से 782 हिजरी, जब उनकी मृत्यु हुई) मखदूम याह्या मनेरी ने नैतिक और आध्यात्मिक रूप से लोगों को प्रभावित करना जारी रखा। असंख्य लोग आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए एकत्रित हुए और बल्ख के शेख़ हुसैन मुइज़ शम्स के अनुसार लगभग तीन सौ लोगों ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया और पवित्रता के शीर्ष स्तर को छू लिया। ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार विभिन्न योगियों ने सीधे मार्ग के साथ-साथ आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त किया, जिससे वे बाद में इस्लाम धर्म ग्रहण कर सकें। सभी संप्रदाय और वर्गों के लोग उनके व्याख्यान में शामिल होते थे, जिससे उन्हें सांत्वना मिलती थी।[x] वे शेख़ से जटिल मुद्दों के बारे में सवाल करते जो समाधान खोजने की उनकी बौद्धिक क्षमता से परे थे और वे उनकी प्रतिक्रियाओं से भी संतुष्ट होंते। मखदूम याह्या मनेरी की तुलना में अन्य सूफ़ी संत लगभग हमेशा अस्पष्ट सत्य और आध्यात्मिकता के जटिल मुद्दों की छिपी परिभाषाओं पर प्रकाश डालते थे।

ज़ैन बद्र अरबी के अनुसार, शेख़ शरफुद्दीन के शिष्यों ने उनसे आध्यात्मिक पहलुओं से संबंधित इस्लामिक मुद्दों की व्याख्या करने का आग्रह करते थे। वह उन्हें संतोषजनक उत्तर देते थे और कभी-कभी ऐसी वास्तविकताओं को भी प्रकट करते थे जो मानव मन के उपभोग से परे थी। दूसरे शब्दों में उनके जवाब शिष्यों और अन्य विद्वानों की बुद्धि पर भी गहरा प्रभाव डालते थे। इसके अलावा वह उन बड़े पदों की व्याख्या (तफ़्सीर) भी करते थे जो विद्वान या उन्नत शिष्यों के लिए लाभप्रद सिद्ध हुए।[xi] नैतिक और मानसिक प्रगति के लिए शेख शराफुद्दीन उन्हें पत्र लिखते थे और ये पत्र आज तक धर्मशास्त्रीय साहित्य में बहुत महत्व रखते हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त घटनाओं के आधार पर एक बात जो वास्तव में दिमाग को प्रभावित करती है, वह है अल्लाह की याद में दृढ़ता से शामिल होने के बावजूद शेख़ शरफुद्दीन अहमद याह्या मनेरी का असंतोष है।[xii] यह वास्तव में एक सवाल है जिसका उत्तर पता लगाना अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य है। एक धारणा जो सामने रखी जा सकती है, वह यह है कि शायद वह अपने पिता के प्रस्थान के साथ-साथ अपने शेख़ (मुर्शिद) के स्वर्गीय होने से काफ़ी विचलित हो गए थे। वह अभी तक उनकी मृत्यु के दर्द को दूर नहीं कर पाये थे। जो

अभी भी उन्हें भीतर से खाए जा रही थी और साथ ही ध्यान करने के लिए एकांत की स्थिति में भी उलझ गए। इसलिए सुख-दुःख का मिश्रण उन्हें बेहतर परिणाम प्रदान करने के लिए नहीं था। मखदूम याह्या शरफुद्दीन मनेरी की मृत्यु के बाद उनकी सीरतुल -शरफ के अनुसार- उनके प्रति निष्ठावान रहने वाले असंख्य शिष्यों को पीछे छोड़ कर चले गए।

संदर्भ

[i]खान, अरसलान यासिर. कंट्रीब्यूशन ऑफ द सूफ़ीस इन द डेव्लपमेंट ऑफ परशियन लैङ्ग्वेज एंड लिटरेचर इन बिहार, सेंटर फॉर परशियन एंड सेंट्रल एशियन स्टडीस स्कूल ऑफ लैङ्ग्वेज, लिटरेचर एंड कल्चरल स्टडीस,जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय न्यू दिल्ली- ११००६७, २०१०,ऑल थेसिस एंड डिजरटेशनस, (ETDs), प्रष्ठ-४७

[ii] नदवी, सय्यद अबुल हसन अली. सेवियर ऑफ इस्लामिक स्पिरिट, अकादेमी ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन्स पी. ओ. बॉक्स ११९, टैगोर मार्ग, नदवा लखनऊ (इंडिया), १९९७, प्रष्ठ-२५९

[iii] वही प्रष्ठ-२६१

[iv] नबी, मोहम्मद नूर. डेव्लपमेंट ऑफ रिलीजियस थॉट इन इंडिया फ्रोम १२०० से १४५० ई., द अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय प्रेस, अलीगढ़ (इंडिया), १९६२, प्रष्ठ-१०५

[v] https://en.wikipedia.org/wiki/Nasiruddin_Chiragh_Dehlavi

[vi] https://en.wikipedia.org/wiki/Abdul-Haqq_Dehlavi

[vii] नदवी, सय्यद अबुल हसन अली. सेवियर ऑफ इस्लामिक स्पिरिट, अकादेमी ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन्स पी. ओ. बॉक्स ११९, टैगोर मार्ग, नदवा लखनऊ (इंडिया), १९९७, प्रष्ठ-२६१

[viii] असकारी,एस. एच. इस्लाम एंड मुस्लिम इन बिहार, ख़ुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना, १९९८

[ix] खान, मसूद अली. अर्ली सूफ़ी मास्टर शरफुद्दीन मानेरी एंड अब्दुल्लाह अंसारी, अनमोल पब्लिकेशन्स PVT. LTD. न्यू दिल्ली- ११०००२ (इंडिया), २००३, प्रष्ठ-३४

[x] नदवी, सय्यद अबुल हसन अली. सेवियर ऑफ इस्लामिक स्पिरिट, अकादेमी ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन्स पी. ओ. बॉक्स ११९, टैगोर मार्ग, नदवा लखनऊ (इंडिया), १९९७, प्रष्ठ-२७३

[xi] जैक्सन, पॉल एस.जे. द वे ऑफ ए सूफ़ी शरफुद्दीन मनेरी, इदारा-ए-अदबियात-ए-दिल्ली २००९, कासिमजान स्ट्रीट, दिल्ली, १९८७, प्रष्ठ-६०

[xii] नदवी, सय्यद अबुल हसन अली. सेवियर ऑफ इस्लामिक स्पिरिट, अकादेमी ऑफ रिसर्च पब्लिकेशन्स पी. ओ. बॉक्स ११९, टैगोर मार्ग, नदवा लखनऊ (इंडिया), १९९७, प्रष्ठ-२७१